चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पंजाब केसरी........

दिनांक 31.10.2020........पृष्ठ संख्या........2........कॉलम........5-8........

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन : प्रो. समर सिंह

एच.ए.यू. में फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका विषय पर वैबिनार में वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

हिसार, 30 अक्तूबर (ब्यूरो): फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वैबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वैबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वैबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की

वैबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व मौजूद अन्य विशेषज्ञ।

अध्यक्षा डॉ. विजया रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वैबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं, जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है।

इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन हेतू किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है।

अवशेषों के उचित प्रबंधन से बढ़ा सकते हैं आमदनी

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें, ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। उन्होंने कहा कि इसे एक सामाजिक आंदोलन का रूप देते हुए सभी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी तभी जाकर यह अभियान सफल होगा। कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ ने बताया कि फसल अवशेषों के प्रबंधन से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बायोगैस, बायोचार, बिजली उत्पादन, कागज उद्योग आदि में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

इन्होंने भी बताए प्रबंधन के उचित तरीके

वैबिनार के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अलावा हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण (हरेड़ा), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों ने फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन और उसके विभिन्न उपयोगों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वैबिनार में एच.ए.यू. के कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक, कृषि विभाग के उप-निदेशक, एस.डी.ओ., सहायक कृषि अभियंता सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अमर उजाला........
दिनांक 31.10.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 6

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन : प्रो. समर

हिसार | फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वेबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आरके झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजया रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....समर उजाला.....

दिनांक 31.10.2020.....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

फसल अवशेषों का किसान करें उचित प्रबंधन : प्रो. समर सिंह

हिसार। फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही। वह विवि के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय की ओर से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि किसान इस बात का विशेष ध्यान रखे कि जब फसल को कंबाइन से कटवाए तो उसमें सुपर मैनेजमेंट सिस्टम लगा हो ताकि फसल अवशेष को पूरे खेत में फैलाया जा सके। इसलिए किसान जीरो टिलेज तकनीक अपनाते हुए हैप्पी सीडर से खेत में अवशेष होने के बावजूद बिजाई करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 31.10.2020 पृष्ठ संख्या....2.....कॉलम.....6.....

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन

जासं, हिसार : फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदुषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी।

यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कही। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**30.10.2020**	——	--

एचएयू में फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका विषय पर वेबिनार में वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वेबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन

रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजय रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन हेतु किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। किसानों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब फसल को कंबाइन से कटवाए तो उसमें सुपर मैनेजमेंट सिस्टम लगा हुआ होना चाहिए ताकि फसल अवशेष को पूरे खेत में फैलाया जा सके। इसलिए किसान जीरो टिलेज तकनीक अपनाते हुए हैप्पी सीडर से खेत में अवशेष होने के बावजूद बिजाई करें।

अवशेषों के उचित प्रबंधन से बढ़ा सकते हैं आमदनी

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। उन्होंने कहा कि इसे एक सामाजिक आंदोलन का रूप देते हुए सभी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी तभी जाकर यह अभियान सफल होगा। कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ ने बताया कि फसल अवशेषों के प्रबंधन से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बायोगैस, बायोचार, बिजली उत्पादन, कागज उद्योग आदि में इसका प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार फसल अवशेषों का विभिन्न तरीके से प्रबंधन कर किसान मुनाफा कमा सकते हैं और अपनी आमदनी में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

इन्होंने भी बताए प्रबंधन के उचित तरीके

वेबिनार के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अलावा हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण (हरेड़ा), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों ने फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन और उसके विभिन्न उपयोगों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार में एचएयू के कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक, कृषि विभाग के उप-निदेशक, एसडीओ, सहायक कृषि अभियंता सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**30.10.2020**	——	--

'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' पर वेबिनार आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजया रानी ने वेबिनार के बारे में बताया।

कुलपति ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन हेतू किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है।

हिसार। वेबिनार के दौरान संबोधित करते कुलपति प्रो. समर सिंह व मौजूद अन्य विशेषज्ञ।

कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। उन्होंने कहा कि इसे एक सामाजिक आंदोलन का रूप देते हुए सभी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी तभी जाकर यह अभियान सफल होगा। कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ ने बताया कि फसल अवशेषों के प्रबंधन से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बायोगैस, बायोचार, बिजली उत्पादन, कागज उद्योग आदि में इसका प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार फसल अवशेषों का विभिन्न तरीके से प्रबंधन कर किसान मुनाफा कमा सकते हैं और अपनी आमदनी में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

इन्होंने भी बताए प्रबंधन के उचित तरीके

वेबिनार के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अलावा हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण (हरेड़ा), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों ने फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन और उसके विभिन्न उपयोगों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**30.10.2020**	——	--

समस्त हरियाणा शुक्रवार, 30 अक्टूबर, 2020

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना : वीसी

एचएयू में फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका विषय पर वेबिनार में वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे।

वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वेबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजया रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन हेतू किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है।

किसानों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब फसल को कंबाइन से कटवाए तो उसमें सुपर मैनेजमेंट सिस्टम लगा हुआ होना चाहिए ताकि फसल अवशेष को पूरे खेत में फैलाया जा सके। इसलिए किसान जीरो टिलेज तकनीक अपनाते हुए हैप्पी सीडर से खेत में अवशेष होने के बावजूद बिजाई करें।

अवशेषों के उचित प्रबंधन से बढ़ा सकते हैं आमदनी

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। उन्होंने कहा कि इसे एक सामाजिक आंदोलन का रूप देते हुए सभी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी तभी जाकर यह अभियान सफल होगा। कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ ने बताया कि फसल अवशेषों के प्रबंधन से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बायोगैस, बायोचार, बिजली उत्पादन, कागज उद्योग आदि में इसका प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार फसल अवशेषों का विभिन्न तरीके से प्रबंधन कर किसान मुनाफा कमा सकते हैं और अपनी आमदनी में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

इन्होंने भी बताए प्रबंधन के उचित तरीके

वेबिनार के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अलावा हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण (हरेड़ा), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों ने फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन और उसके विभिन्न उपयोगों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार में एचएयू के कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक, कृषि विभाग के उप-निदेशक, एसडीओ, सहायक कृषि अभियंता सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**30.10.2020**	——	--

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन : प्रोफेसर समर सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 30 अक्टूबर : फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वेबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजया रानी ने वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन हेतू किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ ने बताया कि फसल अवशेषों के प्रबंधन से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बायोगैस, बायोचार, बिजली उत्पादन, कागज उद्योग आदि में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**30.10.2020**	——	--

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना : कुलपति

हिसार/30 अक्टूबर/रिपोर्टर

फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वैबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वैबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वेबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आरके झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वैबिनार के बारे में बताया। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन

हेतू किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। किसानों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब फसल को कंबाइन से कटवाए तो उसमें सुपर मैनेजमेंट सिस्टम लगा हुआ होना चाहिए ताकि फसल अवशेष को पूरे खेत में फैलाया जा सके। इसलिए किसान जीरो टिलेज तकनीक अपनाते हुए हैप्पी सीडर से खेत में अवशेष होने के बावजूद बिजाई करें। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ौतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। उन्होंने कहा कि इसे एक सामाजिक आंदोलन का रूप देते हुए सभी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी तभी जाकर यह अभियान सफल होगा। कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आरके झोरड़ ने बताया कि फसल अवशेषों के प्रबंधन से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए बायोगैस, बायोचार, बिजली उत्पादन, कागज उद्योग आदि में इसका प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार फसल अवशेषों का विभिन्न तरीके से प्रबंधन कर किसान मुनाफा कमा सकते हैं और अपनी आमदनी में बढ़ौतरी कर सकते हैं। वैबिनार के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अलावा हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण (हरेड़ा), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों ने फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन और उसके विभिन्न उपयोगों के बारे में जानकारी दी। वैबिनार में एचएयू के कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक, कृषि विभाग के उप-निदेशक, एसडीओ, सहायक कृषि अभियंता आदि शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**30.10.2020**	——	--

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधनः प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूजः हिसार, 30 अक्टूबर। फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से किया गया। इस वेबिनार के संयोजक कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. आरके झोरड़ जबकि सह-आयोजक डॉ. मुकेश जैन रहे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डॉ. विजया रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है।

इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन हेतु किसानों को जागरूक करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चला रही हैं। किसानों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब फसल को कंबाइन से कटवाए तो उसमें सुपर मैनेजमेंट सिस्टम लगा हुआ होना चाहिए ताकि फसल अवशेष को पूरे खेत में फैलाया जा सके। इसलिए किसान जीरो टिलेज तकनीक अपनाते हुए हैप्पी सीडर से खेत में अवशेष होने के बावजूद बिजाई करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी नई दिल्ली	**31.10.2020**	——	--

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन : प्रो. समर सिंह

हिसार : वेबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व मौजूद अन्य विशेषज्ञ। (छाया : राज पराशर)

हिसार, 30 अक्तूबर (राज पराशर) : फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से 'फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका' विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्षा डा. विजया रानी ने सभी का स्वागत करते हुए वेबिनार के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में किसान धान की पराली व अन्य फसल अवशेषों को खेत में ही जला देते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। किसानों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब फसल को कंबाइन से कटवाएं तो उसमें सुपर मैनेजमेंट सिस्टम लगा हुआ होना चाहिए ताकि फसल अवशेष को पूरे खेत में फैलाया जा सके। इसलिए किसान जीरो टिलेज तकनीक अपनाते हुए हैप्पी सीडर से खेत में अवशेष होने के बावजूद बिजाई करें।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. बीआर कंबोज ने कहा कि किसान फसल अवशेषों को मशीनों की सहायता से जमीन में मिला दें ताकि इससे जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके और पर्यावरण प्रदूषण भी न हो। वेबिनार के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अलावा हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण (हरेड़ा), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों ने फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन और उसके विभिन्न उपयोगों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार में एचएयू के कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक, कृषि विभाग के उप-निदेशक, एसडीओ, सहायक कृषि अभियंता सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	**30.10.2020**	ऑनलाइन	--

फसल अवशेष किसानों के लिए सोना, मशीनों से करें उचित प्रबंधन : समर सिंह

SHARE 0

एचएयू में फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य

एचएयू में फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन में मशीनरी व अन्य तकनीकों की भूमिका विषय पर वेबिनार में वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

हिसार,

फसलों के अवशेष किसानों के लिए एक प्रकार से सोना है। इसे जलाने की बजाय किसानों को आधुनिक मशीनों का प्रयोग कर उनका उचित प्रबंधन करना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदुषण पर भी नियंत्रण हो सकेगा और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी।

यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति ामर सिंह ने विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से